चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला 455

स्वोपज्ञ'परिमला'ख्यव्याख्योपेता श्रीमन्महेश्वरानन्दप्रणीता

महार्थमञ्जरी

'भारती'भाषाभाष्योपेता

डॉ० श्यामाकान्त द्विवेदी 'आनन्द'

एम०ए०, एम०एड्० व्याकरणाचार्य पी-एच०डी० डी०लिट्



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

विषयानुक्रमणी

विषय पु	ष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ महाप्रकाश गुरु की वन्दना	3	+ आणव मल	88
+ गुरुतत्त्व की महिमा	4	+ मायीय मल	
• अभिधान-अभिधेयवाद	. (40)	+ कार्म मल	88
• महाप्रकाशात्मा परमशिव कः	14	+ आत्मा की समस्त प्राणियों	90
स्वरूप	88	में स्फुटता	LV
+ विमर्श शक्ति और माया	1900	+ प्रकाशरूप शिव द्वारा समस्त	48
+ विमर्श शक्तिसमवेत परमशिव	89	मलों का ध्वंस	40
+ माया का स्वरूप	2 0	 प्रकाश और कर्तृत्व का सामरस्य 	
 विमर्श का स्वरूप 	20	 + सकल 	Eq
+ प्रकाश-विमर्श		+ प्रलयाकल	EE
• शिव एवं शक्ति का अभेद	23	+ विज्ञानाकल	EE
+ शक्ति और विमर्श	22	 विमर्श और विश्वविस्तार 	E 19
• विमर्श शक्ति और स्वातन्त्र्य शक्ति	. 5.73	+ विमर्श-स्वरूप	86
+ विमर्श की अवस्थायें		+ निगमन	190
+ सांख्य का सत्कार्यवाद और	20	+ स्वात्मविश्रान्ति	७१
आगमिक सर्वविमर्शवाद	२६	 परासंवित्, प्रकाश एवं विमर्श 	92
+ आत्मा की विश्वमूलकता तथा उसव	त <u>ी</u>	+ सत्, चित् एवं आनन्द का	
स्वत:प्रामाणिकता	२७	अन्त:सम्बन्ध	७४
 शिव की सार्वत्रिक स्फुरता 	38	+ विमशॉन्मेष और जगत्	७५
+ शिवतत्त्व (या आत्मसत्ता) की		+ शैवागम के छत्तीस तत्त	७७
अनिर्वचनीयता	38	+ विमर्श के दो पृथक्-पृथक् रूप	30
+ अनात्मोपासना की दिशा में साफ-		+ परमस्वच्छन्द शिव और	
ल्याप्ति के प्रति शंकास्पदता	3 6		60
+ विधि-निषेध के नियम या सिद्धान्त			63
+ विधि-निषध	85	+ शक्ति का स्वरूप	64
+ आत्म-पर्यालोचना के अभाव के	Œ.	+ औन्मुख्य का स्वरूप	219
दुष्परिणाम	85	+ शिव का स्वभाव	90
+ शिव की शक्तियाँ और उनका		+ आरम्भवाद एवं असत्कार्यवाद	
पशुओं में संकोच	86	का खण्डन	99

 सदाशिव और ईश्वर का स्वरूप सदाशिव और ईश्वर का स्वरूप सप्त प्रमाता भगवित चिति का संकोच— प्रमातृत्व सदाशिव तत्त्व श्वर्व तिव्यातत्त्व के विमर्श : ज्ञान की अवस्था मन्त्रमहेश्वर और उनका विमर्श सादाख्य तत्त्व मन्त्रमहेश्वर और उनका विमर्श सादाख्य तत्त्व भगवति का संकोच— प्रमातृत्व भगवतत्त्व एवं विद्यातत्त्व के विमर्श : ज्ञान की अवस्था भगवतत्व का स्पन्दन अहं और इदं की अनुभृति सत्ता एवं विकास की भृमिकाय भगवता का स्पन्दन अहं और इदं की अनुभृति सत्ता एवं विकास की भृमिकाय भगवता का स्वरूप भगवता का स्वरूप भगवता का स्वरूप भगवता का स्वरूप भगवा को विकास १०३ भगवा को अवस्था भगवता का स्पन्दन भगवा को विकास १०३ भगवा को प्रमाता भगवता का स्वरूप भगवा को प्रमाता भगवा को प्रमाता भगवा को प्रमाता भगवा को प्रमाता भगवा का सर्वक्रप भगवा को प्रमाता भगवा के विका के प्रमाता भगवा को प्रमाता<th>विषय</th><th>पृष्ठाङ्क</th><th>विषय</th><th>पृष्ठाङ्क</th>	विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
 सदाशिव और ईश्वर का स्वरूप सप्त प्रमाता भगवित चिति का संकोच— प्रमातृत्व सदाशिव तत्त्व सदाशिव तत्त्व शवतत्त्व एवं विद्यातत्त्व के विमर्श : ज्ञान की अवस्था मत्त्रमहेश्वर और उनका विमर्श सादाख्य तत्त्व भगवति चित का संकोच— प्रमातृत्व भगवतित्व एवं विद्यातत्त्व के विमर्श : ज्ञान की अवस्था मत्त्रमहेश्वर और उनका विमर्श अहं और इदं की अनुभूति अहं और इदं की अनुभूति भाव पवं विकास की भूमिकार्थ भाव पवं विकास की भूमिकार्य भाव पवं विकास की भूमिकार्थ भव पवं विकास की भूमिकार्य भव पवं व	+ सदाशिव और ईश्वर का स्वरूप	98	+ आवरणद्वय	222
 सप्त प्रमाता भगवित चिति का संकोच— प्रमातृत्व सदाशिव तत्त्व श्व सदाशिव तत्त्व श्व सदाशिव तत्त्व श्व सदाशिव तत्त्व भगवतत्त्व एवं विद्यातत्त्व के विमर्श : ज्ञान की अवस्था मन्त्रमहेश्वर और उनका विमर्श सादाख्य तत्त्व श्व सदाख्य तत्त्व श्व अहं और इदं की अनुभूति श्व अहं और इदं की अनुभूति भाव तत्त्व का स्पन्दन अहं और इदं की अनुभूति भाव त्वकास भूद अध्या : ५ तत्त्वों का विकास भ्रमेय एवं प्रमाता भाता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप ज्ञात भाव पवं विद्या का स्वरूप श्व अवध्या : ५ तत्त्वों का विकास भाव का सर्वक्ष प्रश् श्व स्वर्ण श्व श्व श्व श्व श्व श्व श्व श्व श्व श्व			+ महामाया और मायाशक्ति	
 भगवित चिति का संकोच— प्रमातृत्व भद्याशिव तत्व शवतत्त्व एवं विद्यातत्त्व के विमर्श : ज्ञान की अवस्था भन्त्रमहेश्वर और उनका विमर्श भवतत्त्व का स्यन्दन शवतत्त्व का स्यन्दन शवतत्त्व का स्यन्दन शवतत्त्व का स्यन्दन अहं और इदं की अनुभृति गुद्ध अध्या : ५ तत्त्वों का विकास भमें यहां प्रमाता भहां प्रमाता भहां प्रमाता भहां प्रमाता भहां प्रमाता भहां विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ भहां व्यापार भहां व्यापार भहां व्यापार भएमात्मा शिव का सर्वकर स्वरूप १३४ भरमात्मा का कर्तृत्वादि व्यापार १३४ भदां विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात भहां विद्या का स्वरूप १०५ भएमात्मा शिव को शक्तियाँ भएमात्मा को शक्तियाँ भएमात्मा शिव को शक्तियाँ भएमात्मा को शक्तियाँ भएमात्मा शिव को शक्तियाँ भएमात्मा शिव को शक्तियाँ भएमात्मा को शक्तियाँ भएमात्मा शिव को शक्तियाँ भएमात्मा शिव को शक्तियाँ भएमात्मा शिव को शक्तियाँ भएमात	+ सप्त प्रमाता	93	- Transferred and a second	
प्रमातृत्व १४ + सदाशिव तत्व १६ - शिवतत्त्व एवं विद्यातत्त्व के विमर्श : ज्ञान की अवस्था १७ - मन्त्रमहेश्वर और उनका विमर्श १८ - सादाख्य तत्त्व १८ - शिवतत्त्व का स्मन्दन १०१ - अहं और इदं की अनुभृति १०३ - सत्ता एवं विकास की भृमिकायें १०३ - गुद्ध अध्या : ५ तत्त्वों का विकास १०३ - प्रमेय एवं प्रमाता १०३ - प्रमेय एवं प्रमाता १०३ - सदाशिव एवं ईश्वर में भेद १०५ - ज्ञात, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ - ज्ञात, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ - ज्ञात, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ - सद्धिया १०८ - अहं इदम् ११२ - गुद्ध विद्या का स्वरूप १०५ - भ्रद्धाध्या तत्त्व ११२ - गुद्ध विद्या का स्वरूप १०५ - भ्रद्धाध्या तत्त्व ११२ - गुद्ध विद्या का स्वरूप ११२ - गुद्ध विद्या का स्वरूप ११३ - परमात्मा शिव की शक्तियाँ १३८ - गुद्ध विद्या का स्वरूप ११३ - परमात्मा शिव की शक्तियाँ १३८ - गुद्ध विद्या का स्वरूप ११३ - परमात्मा की पूर्णता १३८ - गुद्ध विद्या का स्वरूप ११३ - परमात्मा की पूर्णता १३८ - परमात्मा की पूर्णता १३८ - परमात्मा शिव की शक्तियाँ १३८ - परमात्मा शिव की शक्तियाँ १३८ - परमात्मा शिव की शक्तियाँ १३८ - परमात्मा की पूर्णता १३८ - परमात्मा की पूर्णता १३८ - परमात्मा शिव की शक्तियाँ १३८ - परमात्मा की पूर्णता १३८ - परमात्मा की पूर्णता १३८ - परमात्मा शिव की शक्तियाँ १३८ - परमात्मा की पूर्णता १३८ - परमात्मा की पूर्णता १३८ - परमात्मा शिव की शक्तियाँ १३८ - परमात्मा शिव को शक्तियाँ १३८ - परमात्मा की पूर्णता १३८ - परमात्मा की पूर्णता १३८ - परमात्मा को पूर्णता १३८ - परमात्मा शिव को शक्तियाँ १३८ - परमात्मा को पूर्ण १३८ - परमात्मा शिव को शक्तियाँ १३८ - परमात्मा को पूर्ण १३८ - परमात्मा शिव को प्रक्ष १३८ - परमात्मा शिव को प्रक्ष १३८ - परमात्मा का स्वर्य १३८ - परमात्मा शिव को प्रक्ष १३८ - परमात्मा श्व के प्र	 भगवित चिति का संकोच— 		The state of the s	१२४
 सदाशिव तत्त्व शिवतत्त्व एवं विद्यातत्त्व के विमर्श : ज्ञान की अवस्था मन्त्रमहेश्वर और उनका विमर्श सदाख्य तत्त्व शिवतत्त्व का स्पन्दन अहं और इदं की अनुभूति मता एवं विकास की भूमिकाय मता हें प्रमाता मता हें प्रमाता मता ब्रह्म एवं इंश्वर में भेद मता ब्रह्म एवं विद्या का स्वरूप १०५ मता के विकास स्वरूप १३० मता ब्रह्म एवं विद्या का स्वरूप १०५ मति विद्या का स्वरूप १०५ मति विद्या का स्वरूप मता के विकास का स्वरूप मता ब्रह्म विद्या का स्वरूप मता ब्रह्म १०५ मति वा प्रमाता मता ब्रह्म पर्व विद्या का स्वरूप मता ब्रह्म पर्व प्रमाता मता ब्रह्म पर्व विद्या का स्वरूप मता ब्रह्म पर्व प्रमाता मता ब्रह्म पर्व का सर्वक्र स्वरूप मता ब्रह्म पर्व का सर्वक्र स्वरूप मता ब्रह्म पर्व का सर्वक्र पर्व प्रमाता मता ब्रह्म प्रमाता मता ब्रह्म प्रमाता मता ब्रह्म पर्य प्रमाता मता ब्रह्म प्रमाता<	प्रमातृत्व	98		
 शिवतत्त्व एवं विद्यातत्त्व के विमर्श : ज्ञान की अवस्था मन्त्रमहेश्वर और उनका विमर्श शिवतत्त्व का स्पन्दन शिवतत्त्व का स्पन्दन अहं और इदं की अनुभूति सता एवं विकास की भूमिकायें शुद्ध अध्वा : ५ तत्त्वों का विकास मंग्र पवं प्रमाता सदाशिव एवं ईश्वर में भेद ज्ञात, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ अहं इदम् शुद्धाध्वा तत्त्व संद्विद्या का स्वरूप संविद्यात्मा महेश्वर की शक्तियाँ शुद्ध विद्या का स्वरूप सुद्धा का स्वरूप सुद्ध विद्या का सुद्ध व	+ सदाशिव तत्त्व	98	The second secon	
भाया के विभिन्न लक्षण १२६ भन्नमहेश्वर और उनका विमर्श १८८ भावाख्य तत्त्व १९८ शावतत्त्व का स्पन्दन १०१ अहं और इदं की अनुभूति १०१ भत्रव अध्वा : ५ तत्त्वों का विकास की भूमिकायें १०३ भत्रव अध्वा : ५ तत्त्वों का विकास १०३ भत्रव अध्वा : ५ तत्त्वों का विकास १०३ भत्रव प्रवं प्रमाता १०३ भत्रव प्रवं प्रमाता १०३ भत्रव प्रवं प्रमाता १०३ भत्रव प्रवं प्रमाता १०३ भत्रव प्रवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ भ्राता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ भ्राता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ भत्रव प्रवं प्रव्या प्रवं १३४ भत्रव विद्या का स्वरूप १३४ भत्रव प्रवं प्रव्या विद्या के भावाभाव ११५ भत्रव विद्या को प्राप्त के उपाय ११६ भत्रव विद्या के भावाभाव ११५ भत्रव विद्या को प्राप्त के उपाय ११६ भत्रव विद्या को प्राप्त को प्राप्त के १४१ भत्रव विद्या को प्राप्त के उपाय ११६ भत्रव विद्या को जोन्युख्य भत्रव विद्या को जोन्युख्य भत्रव विद्या को प्राप्त को जोन्युख्य भत्रव विद्या को जोन्युख्य भत्रव व्यापार १३६ भर्मात्मा का कर्गुत्वाद का खण्डन १३१ भर्मातमा शाव का सर्वक्र प्रव प्रव के आभासन, शक्त विद्यापार १३६ भर्मातमा को प्र्यं को शक्तियाँ १३५ भर्मातमा को प्रव को शक्तियाँ १३५ भर्मातमा को प्रव को शक्तियाँ १३५ भर्मातमा को प्रव को प्रव को प्रव को प्रव को प्रव को प्	+ शिवतत्त्व एवं विद्यातत्त्व के			
 मन्त्रमहेश्वर और उनका विमर्श सादाख्य तत्व शिवतत्व का स्पन्दन अहं और इदं की अनुभूति सता एवं विकास की भूमिकायें सता एवं विकास की भूमिकायें सुद्ध अध्वा : ५ तत्त्वों का विकास सदाशिव एवं ईश्वर में भेद साता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ सादिद्या सदिद्या स्वाद्वाद और उसका प्रत्याख्यान १२९ भरमशिव का स्वरूप भरमात्मा शिव का सर्वकर स्वरूप १३२ भरमात्मा शिव का सर्वकर स्वरूप १३२ भरमात्मा का कर्तृत्वादि व्यापार १३४ भरमात्मा को कर्तृत्वादि व्यापार १३४ भरमात्मा को क्षात्मामञ्जर्य १३६ भरमात्मा की पूर्णता १३५ भरमात्मा की पूर्णता १३८ भरमात्मा को कर्या १३८ भरमात्मा को पूर्ण के व्यापार १३८ भरमात्मा को	विमर्श : ज्ञान की अवस्था	90		
 सादाख्य तत्त्व शिवतत्त्व का स्पन्दन अहं और इदं की अनुभूति सता एवं विकास की भूमिकायें सुद्ध अध्वा : ५ तत्त्वों का विकास भमेंय एवं प्रमाता सदाशिव एवं ईश्वर में भेद साता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप सात्रा का कर्तृत्वादि व्यापार सात्रा का कर्तृत्वादि व्यापार स्था सात्रा का कर्तृत्वादि व्यापार स्था सात्रा का कर्तृत्वादि व्यापार स्था स्था स्था सात्रा का कर्तृत्वादि व्यापार स्था स्था स्था परमात्मा का कर्तृत्वादि व्यापार स्था स्था परमात्मा का कर्तृत्वादि व्यापार स्था परमात्मा शाव को शक्तियाँ परमात्मा शाव की शक्तियाँ परमात्मा शाव की शक्तियाँ परमात्मा की पूर्णता परमात्मा को शक्तियाँ परमात्मा शिव को शक्तियाँ परमात्मा को क्विय परमात्मा को कर्तवादि परमात्मा को क्वय परमात्मा परमात्मा परमात्मा परमात	+ मन्त्रमहेश्वर और उनका विमर्श	96		
 शिवतत्व का स्पन्दन अहं और इदं की अनुभृति सत्ता एवं विकास की भूमिकायं शुद्ध अध्वा : ५ तत्त्वों का विकास भ्रमेय एवं प्रमाता सदाशिव एवं ईश्वर में भेद ज्ञाता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञाता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञाता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ स्विद्या भ्रह इदम् भ्रद्ध विद्या का स्वरूप भ्रद्ध विद्या का प्रवर्ध विद्या भ्रद्ध विद्या की प्राप्त के उपाय भ्रद्ध विद्या की प्राप्त के उपाय भ्रद्ध विद्या की प्राप्त के उपाय भ्रद्ध वित्या का प्रवर्ध भ्रद्ध विद्या की प्राप्त के उपाय भ्रद्ध वित्य का प्रवर्ध विद्या भ्रद्ध वित्य का प्रवर्ध विद्या भ्रद्ध वित्य का प्रवर्ध विद्या भ्रद्ध वित्य का प्रवर्ध वित्य व	+ सादाख्य तत्त्व	99	The state of the s	
 अहं और इदं की अनुभृति सता एवं विकास की भूमिकायें शुद्ध अध्वा : ५ तत्त्वों का विकास भ्रमेय एवं प्रमाता सदाशिव एवं ईश्वर में भेद ज्ञाता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात १०७ सृष्टि = अवरोहणानुकूल क्रम १०७ सिद्ध्या १०८ अहं इदम् १९२ भ्रद्धाध्वा तत्त्व ११२ भ्रद्धाध्वा तत्त्व ११२ भ्रद्धा का स्वरूप ११३ भ्रद्धा का स्वरूप ११३ भ्रद्धा का स्वरूप ११३ भ्रद्ध विद्या का स्वरूप ११३ भ्रद्ध विद्या का स्वरूप ११३ भरापर दशा एवं शुद्ध विद्या के भावाभाव ११५ सहज विद्या की प्राप्त के उपाय ११६ अहन्ता एवं इदन्ता ११७ मोहनी भायाशक्ति' और उसका स्वरूप ११३ भ्रव्य व्यापार १३४ भ्रामात्मा का कर्तृत्वादि व्यापार १३४ भ्रामात्मा शिव का सर्वक्र १३३ भ्रामात्मा शिव को शक्तियाँ १३५ भ्रामात्म ह्याद का खण्डन १३३ भ्रामात्म को विद्याद का खण्डन १३३<	+ शिवतत्त्व का स्पन्दन	208		
 सत्ता एवं विकास की भूमिकायें १०३ शुद्ध अध्वा : ५ तत्त्वों का विकास स्वातिकास स्वाशिव एवं प्रमाता सदाशिव एवं प्रमाता स्वाता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात १०७ सृष्ट = अवरोहणानुकूल क्रम १०७ सिद्ध्या १०८ अहं इदम् ११२ शुद्धाध्या तत्त्व ११२ संवदात्मा महेश्वर की शक्तियाँ ११२ शुद्ध विद्या का स्वरूप ११३ परमात्मा की पूर्णता १३८ शुद्ध विद्या का स्वरूप ११३ परमशिव की शक्तियाँ १३८ परमशिव की शक्तियाँ १३८ परमशिव की शक्तियाँ १३८ परमशिव को शक्तियाँ १३८ परमशिव का शक्तियाँ १३८ परमशिव को शक्तियाँ १३८ भावभाव ११५ सहज विद्या को प्राप्त के उपाय ११६ भाहनी भायाशिक और उसका स्वरूप ११७ स्वातन्त्र्य शक्ति ११० स्वातन्त्र्य शक्ति १३० स्वातन्त्र्य १३० स्वातन्त्र्य १३० स्वातन्त्र्र स्वात्र १३० स्वातन्त्र स्वात्र का सर्वक्य १३० स्वातन्त्र स्वात	+ अहं और इदं की अनुभूति	202	+ परमशिव का स्वरूप	
 शुद्ध अध्या : ५ तत्त्वों का विकास १०३ प्रमेय एवं प्रमाता सदाशिव एवं ईश्वर में भेद काता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात स्वाता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात स्वाह्या ४०७ स्वाह्या ४०८ साह्या ४०८ अहं इदम् ११२ अहं इदम् ११२ सविदात्मा महेश्वर की शक्तियाँ ११२ स्वाच्या का स्वरूप भएता भएमात्मा की पूर्णता १३५ भएमात्मा शिव को सर्वकर ए३३ भएमात्मा का कर्तृत्वादि व्यापार १३४ भाद्यास्त्र और परमात्मा भएमात्मा शिव की शक्तियाँ १३४ भामामा शिव की शक्तियाँ १३५ भएमात्मा की पूर्णता १३७ भएमात्मा की पूर्णता भएमात्मा को पूर्णता भएमात्मा की पूर्णता भएमात्मा को पूर्णता भएमात्मा की पूर्णता भएमात्मा शिव को शक्तियाँ भएमात्मा का कर्त्वाद का खन्या भएमात्मा शिव को शक्तियाँ भएमात्मा शिव को शक्तियाँ भएमात्मा शिव को सक्त्या भएमात्मा शिव को सक्त्या भएमात्मा शिव को सक्त्य भएमात्मा शिव को सक्त्य भएमात्मा शिव को सक्त्य भएमात्मा शिव को सक्त्य भएमात्मा का कर्त्य भएमात्मा का कर्व भएमात्मा	 सत्ता एवं विकास की भूमिकायें 	803	+ महार्थमञ्जरीकार और विज्ञानभैरव	
 का विकास प्रमेय एवं प्रमाता सदाशिव एवं ईश्वर में भेद ज्ञाता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात १०७ सृष्टि = अवरोहणानुकूल क्रम १०७ सिद्ध्या १०८ अहं इदम् ११२ शुद्धाध्वा तत्त्व ११२ स्रांविदात्मा महेश्वर की शक्तियाँ ११२ सुद्ध विद्या का स्वरूप ११३ परमात्मा की पूर्णता १३५ भ्रांवीवदात्मा महेश्वर की शक्तियाँ ११२ सुद्ध विद्या का स्वरूप ११३ परमारमा की पूर्णता १३८ ज्ञानों के विभिन्न स्तर १३८ शुद्ध विद्या का स्वरूप ११३ परमशिव की शक्तियाँ १३९ परमशिव की शक्तियाँ १३९ परमशिव का शक्तिपञ्चक १४० सहज विद्या को प्राप्त के उपाय ११६ सहज विद्या की प्राप्ति के उपाय ११६ अहन्ता एवं इदन्ता ११७ मोहनी 'मायाशक्ति' और उसका स्वरूप ११७ स्वातन्त्र्य शक्ति १२९ स्वातन्त्र्य शक्ति १२९ भानन्दशक्ति एवं औन्मुख्य भानन्दशक्ति एवं औन्मुख्य भेप भेद १४३ 	+ शुद्ध अध्वा : ५ तत्त्वों			
 प्रमेय एवं प्रमाता सदाशिव एवं ईश्वर में भेद ज्ञाता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञात मृष्टि = अवरोहणानुकूल क्रम सद्विद्या अहं इदम् शुद्धाध्या तत्त्व सुद्धाध्या तत्त्व स्वद्या का स्वरूप शुद्धाध्या तत्त्व स्वद्या का स्वरूप सुद्धाध्या तत्त्व स्वद्या का स्वरूप सुद्धाध्या तत्त्व स्वद्या का स्वरूप सुद्धा विद्या का स्वरूप सहज विद्या का स्वरूप सहज विद्या एवं शुद्ध विद्या के भावाभाव सहज विद्या की प्राप्ति के उपाय ११६ अहन्ता एवं इदन्ता ११७ स्वातन्त्र्य शक्ति भानन्दशक्ति एवं औन्मुख्य भानन्दशक्ति एवं औन्मुख्य स्वातन्त्र्य शक्ति ११७ स्वातन्त्र्य शक्ति ११७ स्वातन्त्र्य शक्ति 	का विकास	803	+ शान्त ब्रह्मवाद का खण्डन	833
 सदाशिव एवं ईश्वर में भेद १०५ ज्ञाता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ ज्ञान १०७ सृष्टि = अवरोहणानुकूल क्रम १०७ सिद्ध्या १०८ अहं इदम् ११२ शुद्धाध्वा तत्त्व ११२ संविदात्मा महेश्वर की शक्तियाँ ११२ सुद्ध विद्या का स्वरूप ११३ परापर दशा एवं शुद्ध विद्या ११५ सहज विद्या को स्वरूप ११३ महज विद्या की प्राप्ति के उपाय ११६ सहज विद्या की प्राप्ति के उपाय ११६ मोहनी 'मायाशक्ति' और उसका स्वरूप ११७ स्वातन्त्र्य शक्ति १२७ स्वातन्त्र्य शक्ति ११७ अानन्दशक्ति एवं औन्मुख्य १४२ अानन्दशक्ति एवं औन्मुख्य १४२ अानन्दशक्ति एवं औन्मुख्य १४२ अानन्दशक्ति एवं औन्मुख्य १४२ सवातन्त्र्य शक्ति १२७ संवातन्त्र्य शक्ति १२७ सवातन्त्र्य शक्ति १२७ सवातन्त्र्य शक्ति १२० सवातन्त्र्य शक्ति १४० सवातन्त्र्य १४० सवातन्त्र शक्ति १४० सवातन्त्र शक्ति १४० सवातन्त्र १४० सवातन्त्र १४० सवातन्त्र १४० सवातन्त्र १४० सवातन्त्र १४० सवातन्त्र १४० सवातन	+ प्रमेय एवं प्रमाता	803	+ इच्छा-ज्ञान-क्रियासामञ्जस्यवाद	
 श्राता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप १०५ श्रात १०७ सृष्टि = अवरोहणानुकूल क्रम १०७ सिद्वया १०८ अहं इदम् ११२ शुद्धाध्वा तत्त्व ११२ संविदात्मा महेश्वर की शक्तियाँ ११२ शुद्ध विद्या का स्वरूप ११३ भरापर दशा एवं शुद्ध विद्या ११५ सहज विद्या एवं शुद्ध विद्या ११५ सहज विद्या की प्राप्त के उपाय ११६ सहज विद्या की प्राप्त के उपाय ११६ अहन्ता एवं इदन्ता ११७ मोहनी 'मायाशिक्त' और उसका स्वरूप ११७ स्वातन्त्र्य शिक्त ११७ स्वातन्त्र्य शिक्त ११७ सानन्द शिक्त एवं औन्मुख्य १४२ अतन्द शिक्त एवं औन्मुख्य १४२ अतन्द शिक्त एवं औन्मुख्य १४२ अतन्द शिक्त एवं औन्मुख्य १४२ स्वातन्त्र्य शिक्त ११७ स्वातन्त्र्य शिक्त ११७ स्वातन्त्र्य शिक्त ११७ स्वातन्त्र्य शिक्त ११७ स्वातन्त्र्य शिक्त १२१ भोनन्दशिक्त एवं औन्मुख्य १४३ 	 सदाशिव एवं ईश्वर में भेद 	204	+ परमात्मा का कर्तृत्वादि व्यापार	
 सृष्टि = अवरोहणानुकूल क्रम १०७ सिद्धा १०८ अहं इदम् ११२ शुद्धाध्वा तत्त्व ११२ संविदात्मा महेश्वर की शक्तियाँ ११२ सुद्ध विद्या का स्वरूप ११३ परापर दशा एवं शुद्ध विद्या ११५ सहज विद्या एवं शुद्ध विद्या के भावाभाव ११५ सहज विद्या की प्राप्त के उपाय ११६ सहज विद्या की प्राप्त के उपाय ११६ मोहनी 'मायाशिक' और उसका स्वरूप ११७ मोहनी 'मायाशिक' और उसका स्वरूप ११७ स्वातन्त्र्य शिक्त १२० आन-पुख्य १४० आन-पुख्य १४१ आन-पुख्य १४१ आन-पुख्य १४२ आन-पुख्य १४२ आन-पुख्य १४२ आन-पुख्य १४२ आन-पुख्य १४२ आन-पुख्य १४२ आन-दशिक एवं औन-पुख्य १४२ सवातन्त्र्य शिक्त १२१ में भेद १४३ 	 ज्ञाता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरू 	प१०५	+ आभासन, शक्ति, विमर्शन	
 सिद्धिया अहं इदम् श्रुद ११२ शुद्धाध्वा तत्त्व संविदात्मा महेश्वर की शक्तियाँ शुद्ध विद्या का स्वरूप शुद्ध विद्या का स्वरूप भएता प्रव शुद्ध विद्या के तत्त्वों का ज्ञान भएतापर दशा एवं शुद्ध विद्या भएतापर दशा एवं शुद्ध विद्या भएता ११२ शुद्धध्वा के तत्त्वों का ज्ञान भएतमशिव की शक्तियाँ भएतमशिव की शक्तियाँ भएतमशिव की शक्तियाँ भएतमशिव का शक्तिपञ्चक भाक्ति का औन्मुख्य भाक्ति का औन्मुख्य भवित् शक्ति भवित्व शक्		१०७	+ स्पन्दशास्त्र और परमात्मा	234
 अहं इदम् शृद्धाध्वा तत्त्व संविदात्मा महेश्वर की शक्तियाँ शृद्ध विद्या का स्वरूप भावाभाव सहज विद्या को प्राप्त के उपाय सहज विद्या की प्राप्त के उपाय मोहनी 'मायाशक्ति' और उसका स्वरूप भावतन्त्र्य शक्ति भावतन्त्र्य शक्ति भावतन्त्र्य शक्ति भावतिन्त्र्य शक्ति भावतिन्त्र भावतिन्ति भ		१०७	+ परमात्मा शिव की शक्तियाँ	१३६
 शुद्धाध्वा तत्त्व संविदात्मा महेश्वर की शक्तियाँ शुद्ध विद्या का स्वरूप परापर दशा एवं शुद्ध विद्या सहज विद्या एवं शुद्ध विद्या के भावाभाव सहज विद्या की प्राप्त के उपाय सहज विद्या की प्राप्त के तत्त्वों का ज्ञान स्वह्म प्राप्त का शिक्तयाँ स्वित्य शिक्त सवित्य के सवित्य शिक्त सवित्य के सवित्य के स्वर्य के सवित्य के		306	+ पूर्णता	१३७
 संविदात्मा महेश्वर की शक्तियाँ ११२ शुद्ध विद्या का स्वरूप ११३ परापर दशा एवं शुद्ध विद्या ११५ सहज विद्या एवं शुद्ध विद्या के भावाभाव ११५ सहज विद्या को प्राप्त के उपाय ११६ सहज विद्या की प्राप्त के उपाय ११६ सर्वचैतन्यवाद १४१ आनन्द शक्ति १४२ औन्मुख्य १४२ सवरूप ११७ आनन्दशक्ति एवं औन्मुख्य १४३ स्वातन्त्र्य शक्ति १२१ में भेद १४३ 		888	 परमात्मा की पूर्णता 	236
 शुद्ध विद्या का स्वरूप परापर दशा एवं शुद्ध विद्या सहज विद्या एवं शुद्ध विद्या के भावाभाव सहज विद्या की प्राप्ति के उपाय सवैतन्यवाद अानन्द शक्ति अौन्मुख्य 		885	 ज्ञानों के विभिन्न स्तर 	258
 परापर दशा एवं शुद्ध विद्या ११५ सहज विद्या एवं शुद्ध विद्या के भावाभाव ११५ सहज विद्या की प्राप्त के उपाय ११६ सवहन्ता एवं इदन्ता ११७ भोन-द शिक्त १४२ औन-मुख्य १४२ सवरूप ११७ सवातन्त्र्य शिक्त १४० भान-दशिक्त एवं औन-मुख्य १४३ 				286
+ सहज विद्या एवं शुद्ध विद्या के भावाभाव				238
भावाभाव ११५ + चित् शक्ति १४१ + सहज विद्या की प्राप्ति के उपाय ११६ + अहन्ता एवं इदन्ता ११७ + मोहनी 'मायाशक्ति' और उसका स्वरूप ११७ + स्वातन्त्र्य शक्ति १२१ में भेद १४३		११५	200	880
+ सहज विद्या की प्राप्ति के उपाय ११६ + सर्वचैतन्यवाद १४१ + अहन्ता एवं इदन्ता ११७ + आनन्द शक्ति १४२ + मोहनी 'मायाशक्ति' और उसका + औ-मुख्य १४२ स्वरूप ११७ + आनन्दशक्ति एवं औन्मुख्य + स्वातन्त्र्य शक्ति १२१ में भेद १४३	+ सहज विद्या एवं शुद्ध विद्या के			880
+ अहन्ता एवं इदन्ता ११७ + आनन्द शक्ति १४२ + मोहनी 'मायाशक्ति' और उसका ११७ + औन्मुख्य १४२ स्वरूप ११७ + आनन्दशक्ति एवं औन्मुख्य + स्वातन्त्र्य शक्ति १२१ में भेद १४३			202	888
+ मोहनी 'मायाशक्ति' और उसका स्वरूप ११७ + स्वातन्त्र्य शक्ति १२१ में भेद १४३		2.2.1		888
स्वरूप ११७ + आनन्दशक्ति एवं औन्मुख्य + स्वातन्त्र्य शक्ति १२१ में भेद १४३				885
+ स्वातन्त्र्य शक्ति १२१ में भेद १४३				585
	The state of the s	११७		
 मायातत्त्व १२२ + इच्छाशिक १४३ 		858	में भेद	683
	+ मायातत्त्व	१२२	इच्छाशिक्त	683

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
ज्ञानशक्ति		+ त्रिक दर्शन के अनुसार प्रकृति	
 क्रियाशिक्त 	284	का स्वरूप	१८३
+ 31, 311, ₹, ₹, 3, 35		+ सांख्य एवं त्रिक दर्शन में प्रकृति	ন-
का रहस्य	१४७	विषयक धारणा में अन्तर	१८४
 स्पन्द, नाद, एजन एवं 		+ त्रिक दर्शन के छत्तीस तत्त्व	828
इच्छा शक्ति	288	+ प्रकृति के पर्याय	264
 महात्रिपुरसुन्दरी और शक्तियाँ 	240	 गुणत्रय की वृत्तियाँ 	१८५
• प्रथम स्पन्द, स्पन्दन एवं ओम		+ सांख्यशास्त्र के तत्त्व	१८७
+ एकोऽहं बहु स्याम् = प्रथम		+ प्रकृति का पञ्चभूतात्मक	
स्पन्द = आद्य इच्छा	१५२		१८७
+ क्षुभिता एवं अक्षुभिता	140102	+ स्थूल महाभूतों की उत्पत्ति	
इच्छा शक्ति	१५३	का क्रम	266
 इच्छाशिक्त के भेद 	244		878
 सोम-सूर्य-अग्निरूपा शिक्त 	244	+ त्रिक दर्शन की प्रकृति	१८९
ज्ञानशक्ति	248	+ अन्त:करण के व्यापार	१९५
 ज्ञानशक्ति का स्वरूप 	248	+ मन, बुद्धि और अहंकार	१९६
+ आनन्द का बहिर्मुखत्व	246	+ करणों की कार्य-प्रक्रिया	१९७
+ शक्तिपञ्चक	240	+ अन्त:करण की कार्यप्रणाली	860
+ भगवती के विभिन्न रूप	१६	 + ज्ञान की प्रक्रिया 	385
+ पञ्चकञ्चुक एवं पाश	१६	 + न्यायशास्त्र में ज्ञान की प्रक्रिः 	या १९९
+ परमात्मा की पाँच शक्तियाँ	१६	३ + विश्व के मूलभूत पदार्थ	866
+ पशु के पाँच कञ्चक	१६	 भ पारमात्मिक विषयालोक और 	
 जीवरूप पशु के कञ्चक 	१६	५ ज्ञानेन्द्रियाँ	508
+ पञ्चशक्ति एवं पञ्चकञ्चक	१६		503
+ शम्भु की अभिनयात्मक		 परमात्मा की कमेंन्द्रियाँ और 	
पुरुषावस्था	१६	६ जीवों में गति-सञ्चार	503
+ पुरुष और परमात्मा की		+ लोकत्रय के क्रीड़ाङ्गण के व्र	तड़ा-
एकरूपता	810	करी परमेश्वर का स्वरूप	२०५
 शिव एवं ऐन्द्रजालिक 	80	 पञ्चमहाभूत और पारमात्मिव 	5
 शाम्भवी शक्ति के अनेकः 	रूप १५	७७ माधुर्य—पारस्परिक अन्तःस	म्बन्ध २०७
+ प्रकृति एवं शम्भवी शक्ति	में	+ पञ्चभूतों और परमशिव के	
ऐकात्म्य	8	८२ माधुर्य में अन्तर	580
+ सांख्य और त्रिक दर्शन :		+ भगवान् का माधुर्य	580
भेदक तत्त्व	8	८३ + सर्वसर्वात्मकतावाद	२११

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृथ्ठाङ्क
+ सर्वसामरस्यवाद	285	+ मन्त्रेश्वर और मन्त्रमहेश्वर	
 शाम्भव शक्ति एवं विश्वोल्ला- 		प्रमाताओं में भेद	२३६
सात्मक व्यापार—पारस्परिक		+ प्रमाताओं की संख्या	२३६
अन्त:सम्बन्ध	283	+ भुवन	२३८
 स्वातन्त्र्य शक्ति के रूपान्तर 	284	+ आनन्दवाद	588
+ शक्तिवाद	२१६	+ उन्मेष-निमेषवाद	588
 शक्ति के परिणाम 	२१६	+ षडध्व या अध्वषद्क	588
 स्वातन्त्र्य शक्ति का विलास 	२१७	+ शिव-शक्ति की अभित्रता	588
+ परिणामवाद	286	+ विश्वचित्र एवं विश्वचित्रकार	284
+ सप्तत्रिंशतत्त्व	388	+ पारमात्मिक शक्ति की असीमता	२४६
+ अध्वषट्क का स्वरूप	220	+ परमशिव की निमेषोन्मेष नामक	
+ अध्वट्क	255	दोनों दशाओं में समान व्यापक	ता
+ शुद्धाध्वा	555	एवं विराट् प्रसार	248
+ अशुद्धाध्वा	255	+ शिव की व्यापकता एवं	
+ अध्वषट्क एवं शुद्धाशुद्ध सृष्टि	553	अध्वप्रसर	242
+ अध्वा के विभिन्न रूप	558	+ विश्वोन्मेषावस्था	248
 मार्ग के प्रकार 	274	+ निमेषावस्था	248
	२२६	+ वेदान्त का खण्डन	248
+ काल के भेद	२२६	+ ज्ञानकला एवं उसके द्वारा लोक	-
+ कला का जन्म			244
		+ भावाभाव—दोनों में संवित् का	
 तत्त्वों का विभाजन-विधान 	252	प्रसार	246
	226	+ बहुत्व में एकत्व का सूत्र	२६२
+ परसंवित्	538	+ शरीर में परमात्मा की ऱ्यापकत	४३५ Т
	535	+ पूजा का तात्विक स्वरूप	२६७
	535	+ पीठतत्त्व और उसका स्वरूप	२६८
		+ प्राणमय कोश	
+ मन्त्रेश्वर	535	+ पीठों की श्रेणियाँ	२६९
+ मन्त्रमहेश्वर		+ कामरूप पीठ	
		+ पूर्णगिरि पीठ	
		+ उड्डीयान पीठ	
		+ जालन्धर पीठ	
+ मन्त्रेश्वर वर्ग	538	+ परमेश्वर की पूजन-प्रक्रिया	२७२
+ मन्त्रेश्वर और मन्त्रमहेश्वर	534	+ परमेश्वर के पूजन की प्रक्रिया	२७३

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ जप का स्वरूप	२७५	+ खेचरी मुद्रा और उसका स्वरूप	308
+ ध्यान का स्वरूप	२७५	+ वर्णक्रम	308
+ योग का स्वरूप	२७५	 शाम्भव शिद्ध के लक्षण 	304
 ध्यान-भावनात्मक समावेशात्मक 		+ संवित् स्वभाव	306
स्वरूप	२७६	+ परमशिव के कृत्यों में शक्तियों की	1
+ जीवन्मुक्ति का स्वरूप	२७६	अनुस्यूतता तथा उनकी संख्या	306
+ अर्चना का रहस्य	२७७	+ प्रथापञ्चक	388
+ पाँच शक्तियाँ	२७८	+ दस शक्तियाँ	385
+ भासा शक्ति	२७८	+ स्थितिक्रम	3 2 3
 चाह 	260	+ इन्द्रियों की बारह स्फुरतायें	388
+ शरीररूपात्मक महापीठ	२८१	+ युगनाथ	388
+ पञ्चवाह	२८६	+ संहति-क्रम	3 2 4
 + उपासनाक्रम 	२८७	+ शक्तियों की स्थिति	380
 व्योमवामेश्वरी शक्ति 	225	+ अवस्थाचतुष्टय के युग्म	380
+ खेचरी शक्ति	226	+ विकल्पातीता भासा शक्ति का	
+ दिक्चरी शक्ति	225	स्वरूप	386
+ गोचरी शक्ति	328	+ भासा शक्ति का स्वरूप	320
+ भूचरी शक्ति	228	+ प्रतिबिम्बवाद का खण्डन	3 2 2
+ पारमेश्वरी शक्ति के वागात्मक		+ भासा शक्ति और उसका स्वरूप	358
रूप	268	+ तिरोधान	324
 स्पन्दकारिका के अनुसार 		+ अनुग्रह	324
शक्तिचक्र	268	+ सृष्टि से भासापर्यन्त सृजन	३२६
 पतिभूमिका में अवस्थित शक्तिय 	गँ २९०	+ जड़ ब्रह्मवादियों का सिद्धान्त	378
+ शक्तिवर्ग की द्विमुखी प्रवृत्ति	288	+ पूजा एवं पूजा के सारभूत तत्त्व	326
 वाणियों का मूल स्वरूप 	365	+ यथार्थ पूजा का स्वरूप	335
+ पीठतत्त्व	284	 पूजा के दो स्वरूप 	335
+ वृन्दचक्र का स्वरूप	284	+ देवता का स्वरूप	335
+ वृन्दचक्र	305	+ सामान्य जनों की अपरा पूजा	
+ सिद्धों की संख्या	305	का स्वरूप	333
+ मुद्राविज्ञान और उसका स्वरूप		+ पूजा-विधि	333
+ क्रोधनी मुद्रा का स्वरूप		+ औपचारिक एवं यथार्थ पूजा	
+ भैरवी मुद्रा और उसका स्वरूप	303	में अन्तर	334
 लेलिहाना मुद्रा और उसका 		+ चिद्धृमि में विश्रान्ति ही पूजा	338
स्वरूप	308	+ समयाचारियों का पूजा-विधान	386

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ पञ्जविध साम्य	385	+ विद्या	364
+ योगिनीहृदयोक्त पूजा के प्रकार		+ राग	364
+ परा पूजा	385	+ काल	३६६
+ परापरा पूजा	383	+ नियति	३६६
+ अपरा पूजा	383	+ प्रकृति	३६६
 सहस्रदल कमल की स्थिति 	384	+ मलत्रय	३६६
+ त्रिपुरोपासना	386	+ कशुक	३६६
 प्राणायाम का यथार्थ स्वरूप 	386	+ आणव मल के प्रकार	३६७
+ प्राणायाम	340	+ स्वातन्त्र्यात्मा चिति शक्ति	350
+ प्राणायाम के भेद	340	+ भगवती संवित् का आत्मगोपन	
+ प्राणायाम का फल	340	व्यापार	३६८
+ प्राणायाम-साधना के फल	340	+ संवित् शक्ति का अवरोहण क्रम	३६८
+ शुद्धि के उपाय	344	+ आरोहण के उपाय	३६८
+ मलत्रय का उन्मूलन	३५६	+ अनुपायतत्त्व	346
+ शोष का स्वरूप	३५६	+ अभिनवगुप्तपाद और अनुपाय	308
 दाह का स्वरूप 	340	+ उपायों का क्रम	302
+ आप्लावन का स्वरूप	340	+ बन्धन और मल	303
+ मल का शोष और बुद्धि की		+ बन्धन का स्वरूप	303
आवश्यकता	346	+ अज्ञान के दो रूप	४७६
+ संसारांकुरकारण	349	+ मालिनीविजयोत्तरतन्त्र और	
+ मल के विभिन्न स्वरूप एवं पक्ष	349	समावेश	४७६
+ मलों के प्रकार	380	 उपाय एवं समावेश 	३७४
+ परमशिव की दो अवस्थायें	३६१	+ उपाय	३७५
+ आत्मा की तीन अवस्थायें	३६२		304
+ पशु	३६२	+ शाम्भवोपाय का स्वरूप	304
 भेदप्रथा-प्रसिवनी माया 	383	+ ज्ञान और मल : अन्त:सम्बन्ध	३७७
+ मल	\$ £ 3	+ शक्तिपात	३७७
+ प्रलयाकल	3 6 3	+ ज्ञान-श्रेणी और मलकल्पना	३७७
+ विज्ञानाकल	३६३	+ उपाय और ज्ञानतत्त्व तथा	
+ पाश	3 6 3	मलशोष	३७८
+ आणव मल	३६३	+ परामर्श	३७९
+ मल के कारणभूत षट्कञ्चकों			३७९
का स्वरूप	115/19/107	+ ज्ञान का सर्वाधिक महत्त्व	३७९
+ कला	३६५	+ इच्छात्मक उपाय	360

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ शाक्तोपाय	368	+ देवताविषयक बौद्ध मत	883
+ आणवोपाय	20000	+ लयक्रम	883
+ बन्धन का कारण	368		
+ मृक्ति और बन्धन (जैन दर्शन)	2002	The state of the s	888
+ मृक्ति के साधन—जैन मार्ग	364		
+ मृक्ति के उपाय (स्पन्दकारिका)	364		888
+ स्पन्दात्मक आत्मबल की प्राप्ति	३८६		884
+ शुद्धि के उपाय (योगसूत्र)	३८६	+ देवों के कुल	884
	03€	 + पञ्चरक्षामण्डल 	884
+ शुद्धि के उपाय (त्रिकदर्शन)			४१६
	३८७		४१८
	360	+ मन्त्र के लक्षण एवं उनका	
 शुद्धि के उपाय : शांकर दर्शन 	366	यथार्थ स्वरूप	886
+ पूजा-सामग्रियों के प्रतीकार्थ		+ मन्त्र का स्वरूप	850
 पूर्णाहन्ता के मुख में विश्वविकल 	Ч	+ आत्मसत्ता के दो पक्ष एवं मन्त्र	ानु-
का निक्षेप	394	सन्धान की दो अवस्थायें	850
 देवता का स्वस्वरूप 	800	 मन्त्र के व्यापार 	858
 देवतातत्त्व और भावनायोग 	803	+ त्रिक दर्शन में विभव का स्वरू	प ४२१
+ देवता या भगवान् का यथार्थ		+ विमर्श का यथार्थ स्वरूप	853
स्वरूप	803	+ मन्त्र के लक्षण	853
+ देवता के लक्षण	808	+ मन्त्र एवं शिव के साथ	
+ देवता का स्वभाव	808	अभेदापत्ति	४२६
+ देवता और उपासक की आत्मा		+ मन्त्रों की स्वनिहित शक्ति की	
में सामरस्य	804	अपरिमेयता	858
 आत्मोपासना पर बल 			855
+ देवोपासना में उपासक के भावे		+ मन्त्रानुसन्धाताओं की दो	
का प्रामुख्य	४०६	अवस्थायें	856
 योग का स्वरूप 	808	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	856
 विश्व : परमात्मा का योगैश्वर्य 	800	+ संकोच	856
 स्वात्मारूप संवित् तत्त्व ही देव 			830
 तादात्म्यभावापत्र पूजा का फल 			835
		+ मध्यमा वाक् का स्वरूप	833
+ मन्त्र और देवता का तादात्म्य			833
+ देवता का आविर्भाव	863	+ सूक्ष्मा वाक् का स्वरूप	833

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ परा वाक् का स्वरूप	838	+ परा वाक् और परबोध	848
+ वाक्चतुष्टय का मूल स्वरूप	४३६	+ ज्ञानावतरण और वाक्तत्त्व	842
 वाणियों के नामकरण का आध 	ए ६४ म	+ देवाराधनोपयोगी सर्वोच्च मुद्रा व	ы
 वाणी और त्रिपुरभैरवी में 		स्वरूप	843
ऐकात्म्यभाव	836	+ सर्वमुद्रात्मिका मुद्रा	844
+ परा शक्ति का रूपान्तरण	836	+ आत्मविमर्शरूप कल्पद्रुम	
+ शक्ति औरा वाक्तत्व	838	का परिचय	846
नाद	888	+ आत्मविमर्शरूप कल्पद्रुम का	
+ सर्वोच्च नाद ॐ का उच्चारण	888	स्वरूप	४६१
+ द्वादश कलात्मक ॐ की मात्र	ायें ४४२	+ विमर्श कल्पद्रुम का स्वस्वरूप	४६१
+ द्वादश कलाओं में मात्रायें	885	+ श्री एवं सुखोत्सव का स्वरूप	४६२
+ नाद की चार अवस्थायें	885	+ कला के अर्थ	४६३
+ नादनवक के स्थान	885	+ विमर्शकल्पद्रुम में विमर्श का	
+ वाणियों के नादात्मक रूप	885	स्वरूप	883
 वाक्तत्व का वंशवृक्ष 	883	+ ब्रह्मद्वैतवाद का प्रत्याख्यान	४६४
 वाणियों का यथार्थ मूल स्वरूष 	६४४ म	+ परमात्मा का कालातीत एवं	
+ वैखरी वाक् और उसका स्वरू	४४४ म	मोक्षातीत स्वरूप	४६४
+ भगवती त्रिपुरसुन्दरी के विभिन्न		+ परमबिन्दु का आत्मविभाजन	४६९
लक्षण	888	+ काल के कारण बिन्दु का	
+ पञ्चदशाक्षरी विद्या	888	आत्मविभाजन	800
+ वैखरी के भेद	884		४७१
+ क्रियाशक्ति और वैखरी	884	 भोग-मोक्षसाहचर्यवाद 	४७३
 विराट् पुरुष एवं वैखरी वाक् 	का	+ जीवन्मुक्ति का स्वरूप	४७३
तादात्म्य	४४६	+ शिवमार्ग में मोक्ष की दृष्टि	४७४
+ मध्यमा वाक्		+ जगत् एवं वस्तुसत्य की अज्ञेय	
+ वाणी के अन्य विभाजन		+ परमशिव का प्रकाशक स्वरूप	४७८
+ सप्तपदी विभाजन		+ प्रकाशस्वरूप परमशिव और	
+ सृष्टि के आदि में प्रकट शब्द	880	उसका आनन्द	४७९
+ महानाद के भेद	886	+ आत्मा की स्थिरता	878
+ मध्यमा वाक् के भेद		+ आत्मा की आनन्दरूपता	855
+ स्थूल मध्यमा		+ सर्वात्मवाद	864
+ सूक्ष्म मध्यमा		+ सर्वानन्दवाद	४८६
+ पर मध्यमा		+ आत्मा की सर्वानुस्यूतता	४८६
+ मध्यमा का तात्त्विक मूल स्वर	न्प ४५१	+ सोऽहं मन्त्र और उसकी साधन	178

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
 सोऽहं साधना 	४९१	• अजपा मन्त्र का ध्यान	408
	893	 अजपा मन्त्र का पुरश्चरण 	404
• अजपा-जप की विशेषतायें	883	+ अजपा-साधना से प्राप्त सिद्धियाँ	404
 मनुष्य की आत्मविस्मरणावस्था 		+ अजपा मन्त्र एवं उसकी साधना	400
एवं श्वास-प्रश्वास	४९४	+ योगियों एवं सन्तों की साधना में	
 अजपा-जप का स्वरूप 	898	अजपा-जप	409
 'हंसः' के हकार-सकार का क्रम 	898	+ अजपा जप एवं कुण्डलिनी	422
 हंस: मन्त्र के क्रमविधान में 		+ अधिकारभेदानुसार अजपा तत्त्व	
मतभेद	898	का स्वरूप	488
+ हंस: मन्त्र एवं सोऽहं मन्त्र	884	+ अधिकारभेद से अजपा की	
 हंस: मन्त्र की सोऽहं में परिणति 	894	साधना में भी भेद	485
 जीव का स्वाभाविक मन्त्र एवं 		 योगिसमाज में प्रचलित कुम्भकात 	मक
स्वाभाविक जप	884	अजपा-पद्धति	483
 वायु का सुषुम्णा में प्रवेश और 		+ औपनिषदिक हंसयोग पा	
उसके प्रभाव	884	अजपा-साधना	483
 योगशास्त्र में वर्णित चित्तविक्षेप 		+ अष्टदल कमल और वृत्तियाँ	५१६
एवं श्वास-प्रश्वास	४९६	+ अजपा-जपविषयक ध्यातव्य	
 चित्तविक्षेपों के साथ होने वाले 		बिन्दु	490
अन्य विक्षेप		+ दर्शन की क्रिया	488
+ अजपा-जपसम्बन्धी सिद्धान्त			488
 देशगत गतिवैषम्य 		+ शिव-शक्ति के मिलन की	
+ सिद्धान्त	288	अवस्था	450
 कालगत विषम गति 		+ अजपा जापसम्बन्धी प्रयोग एवं	
+ सिद्धान्त		अनुभव	450
◆ श्वासगति		+ विजयकृष्ण कुलदानन्द की	
 अजपा जप की पारम्परिक एवं 		The second secon	423
		• श्वास-प्रश्वासात्मक नामजप का	VI EVE
		वैज्ञानिक रहस्य	453
		+ नामाराधन	458
The second of th		• नामसाधना के कतिपय नियम	424
• सोऽहं और ॐ में अन्त:सम्बन		A Commence of the Commence of	
+ अजपा-साधना की विधि			५२६
		 सूफियों की साधना-पद्धित 	420
न्यासादिक	404	+ बौद्ध ध्यानयोग	420

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ प्रणवात्मक हंस	430	+ योगियों का आनन्द और	
+ अजपा-जपात्मक तान्त्रिक दृष्टि	433	आनन्दश्रेणियाँ	407
+ विश्वात्मक परमशिव का विश्वाती	त	+ शतपथ ब्राह्मण के आनन्दों का	
स्वरूप	434	श्रेणी-वर्गीकरण	408
+ उपाय और 'योरअरेसुं' गाथा व	ন	+ आनन्द की चतुर्दश श्रेणियाँ	५७६
सम्बन्ध	436	+ योगियों के आनन्द-स्तर	406
+ जगत् और उमा तथा सूक्ष्म	128	+ आनन्दश्रेणियाँ और चतुर्दशात्मव	
और स्थूल	439	सर्ग	469
+ परमशिव के स्वरूपामृतपान का		+ सर्ग-वर्गीकरण (सांख्यदर्शन)	409
अमित प्रभाव	480	+ देवलोक और विदेह तथा	1.0.70.00
+ आणवत्व	488	प्रकृतिलय	460
+ शाक्तत्व .	488	+ आनन्दानुगता समाधि	460
+ दर्पणरूप परमात्मा में प्रतिबिम्ब		+ विदेहावस्था एवं ब्रह्मलोकपर्यन्त	
स्वरूप जगत्	488		468
+ सौगत प्रतिबिम्बवाद का खण्डन	447	+ योगियों के विषय-सौख्य और	
+ स्वातन्त्र्यवाद	443	उनके द्वारा त्रैलोक्य-स्फ्ररण	468
 स्वातन्त्र्यवाद का स्वरूप 	443	+ सर्वानन्दवाद	462
+ शिव की अवस्थायें	448	+ स्वस्वरूपावस्थान और विवेक	463
+ आभासवाद	444	 योग-भोगसाहचर्यात्मक 	
+ आभास का द्विपक्षात्मक स्वरूप	448	यामली सिद्धि	468
+ प्रतिबिम्बवाद	448	+ अमृतस्वभाव भाव की प्राप्ति	
+ विश्व, अवभास एवं भैरवसंवित्	440	का फल	490
+ योगी की अन्तर्मुखता	446	+ गुरु के शक्तिपात की महिमा	498
+ योगी और अदस्थाचतुष्टय	448	+ दीक्षातत्त्व	490
+ महासत्ता की स्थिति एवं		+ चाक्षुषी दीक्षा	496
अवस्थायें	488	+ आणवी दीक्षा	496
+ अवस्थाओं के उपभेद	464	+ शाक्ती दीक्षा	496
+ तुर्यातीतावस्था		+ शाम्भवी दीक्षा	496
 योगियों का योग-भोगसाहचर्यवा 	द५६७	+ बन्धन और मोक्ष	499
+ स्वरूपानन्दोन्माद और योगी की	ì	+ देशिक और देशना	499
लोकोत्तरावस्था	489	+ कटाक्ष	499
		+ मन्थानभैरवोक्त अमृतात्मिका	
 योगी की लोकयात्रा एवं सांसारि 			600
प्राणियों की लोकयात्रा में भेद	460	+ आवागमनात्मक संसरण से मुक्ति	404

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
 + हदय 	806	+ कुरुक्षेत्र में उपदिष्ट महार्थ	
+ उद्योग	809	का स्वरूप	६१९
+ मलों के प्रकारत्रय	६११	 महार्थमञ्जरी के महार्थज्ञान एवं 	
+ बन्धन के कारण	६१२	भगवद्गीता के तत्त्वज्ञान में	
+ म्क्त्यर्थ उपाय	६१२	सामञ्जस्य-प्रतिपादन	६२५
+ समावेश	६१३	+ मन्त्रों के अर्थ	६२६
 शक्तित्रय और मलत्रय 	E 8 3	 महार्थतत्त्व 	६२६
+ मलों के आधार पर जीवविभा	जन६१४	+ सोमानन्दपाद का सर्वशिववाद	E30
• मलों के विधायक पञ्चकञ्चक	E 24	24 2	630
+ चित् शक्ति की पञ्चकृत्यात्मक		+ महार्थमञ्जरी का सारांश	६३१
आत्माभिव्यक्ति	684	+ स्वप्न में उपदेश देने वाली सि	न्द्रा
 पञ्चकृत्यों का स्वभाव 	E 24	योगिनी कालसङ्कर्षिणी को	
+ कुम्भकार द्वारा घटनिर्माण		अभिवादन	638
के सोपान	E 84	+ गाथानुक्रमणी ६४३	288-